कुलविंदर भाटिया

भृगु चक्र पद्धति से घटना का निर्धारण

मूक प्रश्न का अनुमान लगाने की ज्योतिष में अनेक विधियों में से एक प्रचलित पद्धति है – भृगु चक्र पद्धति। महर्षि भृगु द्वारा रचित इस पद्धति में ज्योतिषी

– सर्वप्रथम जातक की आयु की गणना करता है जो सरलता से वर्तमान वर्ष में से जन्मवर्ष को घटा कर हो जाती है।

– पश्चात् उपरोक्त गणितीय संख्या से ज्ञात किया जाता है कि जातक का कौन सा भाव ऊर्जामयी हो रहा है।

ज्योतिषी इससे सम्भावित या मूक प्रश्न का अनुमान लगा लेते हैं। आइए, इसे और विस्तार से समझते हैं :

भृगु चक्र पद्धति के अंतर्गत प्रत्येक भाव 1 वर्ष का प्रतिनिधित्व करता हैं। जन्मकुंडली में 12 भाव होते हैं और प्रत्येक जातक पूरा जीवन चक्र इन्ही 12 भावों के इर्द–गिर्द ही घूमता है। 12 भावों के 9 ग्रहों का समन्वय होता है जो जीवनकाल में जीवन का नेतृत्व करते है।

भृगु चक्र पद्धति के अंतर्गत जातक की पूर्ण आयु 108 वर्ष मानी गयी है इसीलिए प्रत्येक ग्रह को 12–12 वर्ष का अधिपत्य प्राप्त होता है। इसको हम निम्न चित्र द्वारा दर्शा सकते हैं :

भाव	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX
	चन्द्र	बुध	शुक्र	सूर्य	मंगल	गुरु	शनि	राहु	केतु
पहला	1	13	25	37	49	61	73	85	97
दूसरा	2	14	26	38	50	62	74	86	98
तीसरा	3	15	27	39	51	63	75	87	99
चौथा	4	16	28	40	52	64	76	88	100
पाँचवां	5	17	29	41	53	65	77	89	101
छठा	6	18	30	42	54	66	78	90	102
सातवाँ	7	19	31	43	55	67	79	91	103
आठवाँ	8	20	32	44	56	68	80	92	104
नौवां	9	21	33	45	57	69	81	93	105
दसवां	10	22	34	46	58	70	82	94	106
ग्यारहवां	11	23	35	47	59	71	83	95	107
बारहवां	12	24	36	48	60	72	84	96	108

अर्थात् जन्म के समय लग्न भाव को पहला वर्ष मानते हुये अगले 12 सालों तक सभी 12 भावों से एक चक्र पूर्ण होता है। अतः पहला जन्मवर्ष पहले भाव का, दूसरा वर्ष दूसरे भाव का और इसी प्रकार बारहवां वर्ष बारहवें भाव का प्रतिनिधित्व करता है। 13वें वर्ष से दूसरा चक्र शुरू होता है और फिर से लग्न से आरम्भ करते हुए 24वां वर्ष 12वें भाव का प्रतिनिधित्व करेगा। इसी प्रकार 108 वर्ष का का क्रम उपरोक्त चित्र अनुसार निर्धारित होता है। इस प्रकार कुल नौ चक्र निर्मित होते हैं और प्रत्येक चक्र का प्रतिनिधित्व एक ग्रह करता है जिसका नाम उपरोक्त चित्र में वर्णित है।

अब प्रश्न ये उठता है कि 12 भावो में चक्र तो ऐसे ही चलते रहेंगे और भाव भी बार–बार वही आएंगे, जैसे 13वां, 25वां 37वां और 49वां वर्ष लग्न भाव का प्रतिनिधित्व करता है, तो अनुमानित प्रश्न का निर्धारण कैसे होगा?

इस पर चर्चा करने से पूर्व निम्न को भी समझ लीजिए :

1. चन्द्रमा बच्चा है (12वें वर्ष तक)
2. बुध कुमार है (13वें वर्ष से जब

पढ़ने–लिखने की उम्र)

3. शुक्र युवक है (25वें वर्ष से, गृहस्थी इत्यादि)
4. सूर्य अधेड़ है (37वें वर्ष से, विचारो में कुछ परिपक्वता)
5. मंगल परिपक्व है (49वें वर्ष से, विचारो में और परिपक्वता)
6. गुरु वृद्ध है (61वें वर्ष से, ज्ञान युक्त)
7. शनि आदि वयोवृद्ध हैं

चक्रों और ग्रहों से मूक प्रश्न को समझने के लिए दो उदहारण लेते हैं :

उदाहरण 1 :

जन्म तिथि : 21–1–1990

प्रश्न का समय : 14–5–2020

2020 – 1990 = 30 वर्ष

जन्म का महीना जनवरी है और प्रश्न पूछा मई में, अर्थात् जातक 31वे वर्ष में चल रहा है। अतः चक्र पद्धति के अनुसार तीसरा चक्र चल रहा है और कुंडली का 7वां ऊर्जावान हो रहा है। अर्थात् प्रश्न 7वें भाव से सम्बंधित है =विवाह

उदाहरण 2 :

जन्म तिथि : 25–2–1988

प्रश्न का समय : 19–1–2005

2005 – 1988 = 16 वर्ष पूर्ण और 17वें वर्ष में

चक्र पद्धति के अनुसार दूसरा चक्र चल रहा है और कुंडली का 5वां ऊर्जावान हो रहा है। आयु और पंचम भाव के अनुसार प्रश्न या तो शिक्षा से या प्रेम से सम्बन्धित हो सकता है।

हर चक्र में भाव का फल भिन्न होता है और फल का अनुमान लगाने के लिए सक्रिय भाव और चक्र निर्धारित करने के पश्चात् निम्न का आकलन भी करना चाहिए जिससे भाव सम्बंधित फल निर्धारित किये जा सकते हैं :

– सक्रिय भाव के स्वामी की भाव–स्थिति

– सक्रिय भाव में बैठे ग्रह और

– चक्र स्वामी की सक्रिय भाव से स्थिति।

यदि स्थिति 6/8 या 2/12 है या पाप ग्रहों का प्रभाव है तो फल प्राप्ति में बाधा या फल प्राप्त नहीं होंगे । यदि स्थिति शुभ है और शुभ ग्रहों का प्रभाव है तो शुभ या सकारात्मक फलों की प्राप्ति होगी।

के. जी.–1/581, विकास पुरी
नई दिल्ली – 18
9810076483

कार्नेलियन के चिकित्सीय गुण : *Healing Ability Of Carnelian*

इसे धारण करने से शरीर के घाव जल्दी भरते हैं और शरीर से खून कम बहता है. रक्त संबंधी अन्य विकारों में यह उपरत्न सहायक होता है. यह जातक के अंदर शारीरिक शक्ति का भी पूर्ण रुप से विकास करता है।

लाजावर्त मणि या पत्थर तीनों क्रूर ग्रहों (शनि, राहु और केतु) के दोषों और कुप्रभावों को भी खत्म करता है। व्यक्ति घटना, दुर्घटनानों से बच जाता है। इससे सभी तरह का काला जादू और किया–कराया समाप्त हो जाता है। यह मणि पितृदोष को भी समाप्त कर देती है।

कहते हैं कि इससे नौकरी या व्यवसाय में आ रही अड़चने भी दूर होती है। विद्यार्थियों के लिए यह आत्मविश्वास बढ़ाने वाला माना जाता है। इसको धारण करने से तनाव या अवसाद कम होता है।

प्राप्त करने के लिए संपर्क करें : फ्यूचर पॉइंट, ए–3, रिंग रोड, साउथ एक्स पार्ट–1, नयी दिल्ली
दूरभाष : 011–40541000, 40541020